# हवेली स्थापत्य और सौन्दर्य

## श्रीगोपाल हरमोनदास बागड़ी की हवेली (विसं1985)

## प्रस्तावना

**Dr Ritesh Vyas**
**Principal Sister Nivedita Girls College Bikaner**
**9828777455**

सामान्यतः प्रत्येक भवन अपने आप में विशिष्ट तभी होता है जब उसकी बनावट कुछ अलग तरीके से की गई हो। बीकानेर की भवन स्थापत्य में इस तरह का गुण दिखाई देता है जिसमें उसके निर्माण को लेकर चर्चा की जाती है। यद्यपि स्थानीय भवनों के निर्माण में **दुलमेरा लाल पत्थर** का उपयोग अत्यधिक रूप से हुआ है। एक बार इस पत्थर से भवन बना दिया तो कई वर्षों तक फिर कुछ करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। यही पत्थर इन भवनों की मजबूती तथा खूबसूरती का मुख्य कारण है। यहां के सेठों के भवन जिसे हम ***हवेली*** कहते हैं उसमें इस पत्थर का सबसे ज्यादा प्रयोग हुआ है या यूं कहा जाए कि इस पत्थर से ही हवेली को आकार दिया गया है। इस पत्थर के विना बीकानेर की भवन स्थापत्य की कल्पना मात्र कल्पना ही है।

इस पत्थर को सामान्य स्वरूप में भी यदि हवेली निर्माण में काम ले तो भी हवेली अपने सौन्दर्य का प्रदर्शन करेगी। इसमें कोई किन्तु–परन्तु नहीं हैं और यदि इसी पत्थर पर कोई नक्काशी, कारीगरी, हाथ का हुनर दर्शा दिया जाए तो दृश्य ही बदल जाता है। वैसे सेठों ने यदि अपने भवन पर पत्थर लगाने का निश्चय किया हो तो उसे सादा नहीं रखा अर्थात उसमें कारीगर की हथोड़ी अवश्य चलवाई है। बीकानेर के प्रसिद्ध रंगकर्मी श्री कृष्ण चन्द्र शर्मा ने इन लाल पत्थर की अलंकृत हवेलियों के शहर को ***दाड़िम नगरी*** का नाम दिया है। वे कहते हैं शहर के परकोटे में हर कोना लाल ही लाल है, जहां देखो लाल पत्थर की हवेलियां एक दूसरे से ऐसे जुड़ी हैं मानो अनार के दाने एक दूसरे से जुड़े हों।

कोरनी, गोखा, बारी, जाली–झरोखा, नक्काशी इन हवेलियों में चार–चांद लगाते हैं। जिस तरह शेखावाटी की हवेलियां अपनी भित्ति चित्रण परम्परा के कारण विश्व प्रसिद्ध है। इन हवेलियों के कारण ही इस पूरे शेखावाटी अंचल को ***ओपन आर्ट गैलेरी*** कहा गया है। बीकानेर

की हवेलियों में बाहरी सौन्दर्य में कई प्रतिमान दिए गए हैं– तोरण द्वार, मुखड़ा, सीढ़ियों के पास की झालर, छोटी खिड़कियां तथा उनका फ्रेम, मुख्य दरवाजा– दो प्रकार के प्रोल (पिरोल) तथा छोटा दरवाजा, प्रोल के ऊपर बने गणेश जी की प्रतिमा या कोई देवीय स्वरूप, बाहरी दिवार पर बने प्रतीक आदि।

किसी भी नगर की बसावट की यही महत्त्वपूर्ण बात होती है कि वहां की स्थापत्य कला कैसी है। क्योंकि ये कहा गया है कि जब शहर बसाया जाता है तो वहां के भूगोल का भी महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। उसकी परिकल्पना तभी साकार होती है जब वहां के भू–भाग के अनुकूल निर्माण हो। हम जब सैंधव सभ्यता के नगर नियोजन को देखतें हैं तो स्वतः ही हमारे दिमाग में वहां के निवासियों की सोच, उनकी दूरदर्शिता, सामंजस्य का आभास हो जाता है। आज समाज में जो एक जैसे मकान बनाने का चलन है वह हमारी सांस्कृतिक पहचान है और ये हमने आज से 5000 साल पलहे सीख लिया था और आज तक चलन में है। बीकानेर शहर की ये खास बात है कि यहां के भवनों की बनावट में जीवन व कला की एकात्मकता को परिपुष्ट किया है।

ये एक रूपता शायद गुरू शिष्य परम्परा के कारण रही होगी। क्योंकि आज की तरह पहले कोई इंजिनियरिंग की डिग्री धारक तो होते नहीं थे, वे जिस तरह का भवन देख लेते थे उसी तरह के बनवाते चले जाते थे और ये एक तरह से आदर्श नक्शा हो जाता था। कुछ वास्तु शास्त्री भी मानते हैं कि उस दौर में शिक्षा का प्रचार–प्रसार कम था। कुछ सूत्र साहित्य में लोगों ने वास्तु शास्त्रीय नियम, सिद्धान्त बना दिए, जिसमें भवन के दरवाजे की दिशा (पूर्व), रसोई का स्थान (आंगन में),जल कुण्ड का स्थान (आंगन), सीढ़ियां, मन्दिर आदि सभी की स्थिति तय कर दी गई और यही वास्तु के नियम बन गए। यद्यपि ये कितने सही थे तथा कितने उचित, यह तो प्राचीन ग्रंथों में उल्लिखित है। **समरांगन सूत्रधार** में इस संबंध में काफी विस्तृत व्याख्या की है। चलवों द्वारा मकान का बायां भाग अर्थात वाम पक्ष भारी रखना है का

नियम भी तय किया गया था जो भी प्रायः सभी भवनों में दिखता है। कुछ अपवाद स्वरूप मिल भी जाते हैं।

हवेली का मुख्य आकर्षण उसका बाहरी भाग होता है अर्थात मुखड़ा यदि सामान्य बना है तो उसके भीतर के हिस्से भी साधारण मिलते हैं, क्योंकि किसी भी भवन या हवेली को तभी निहारा जाता है जब उसका मुखड़ा कलात्मक हो। उसकी यही विशेषता लोगों को भीतर खींचती है। हम यहां कुछ विशिष्ट हवेलियों की चर्चा करेंगे।

## भवन के मुख्य द्वार पर विविध दैवीय अंकन–

मानव ने प्रारम्भ से ही किसी अदृश्य शक्ति को अपने अस्तित्व का कारण माना है। वो प्रकृतिक शक्ति के रूप में हो या मानवीय स्वरूप में उसे प्राथमिकता दी है। जब देवताओं का मानवीकरण के साथ–साथ उनका कई रूपों में वर्गीकरण हुआ तो उनके गुण भी निर्धारित हुए। इन गुणों के कारण ही प्रत्येक व्यक्ति ने अपने देवता का चुनाव भी किया, जैसे किसी ने शिव को चुना तो किसी ने शक्ति को तो किसी ने कृष्ण को अपना इष्ट बनाया। भवन के भीतर बने मन्दिर में इन देवताओं को प्रमुख स्थान भी दिया जाता रहा। बाद में इन देवताओं के **गणों** की भी प्रधानता बढ़ी जैसे **हनुमान, भैरव** आदि। इसी तरह **सावन** मास में **शिव** की पूजा और **नवरात्रा** में **देवी** की पूजा के विधान का प्रचलन हुआ। मन्दिर में बाल कृष्ण (**लड्डूगोपाल**) का रूप उस परिवार के कृष्ण प्रेम को दर्शाता है। लेकिन भवन के मुख्य द्वार पर हमें सदैव गणेश का ही अंकन मिलता है। विक्रम संवत् 1545 में राव बीका जी ने बीकानेर की स्थापना की वहां भी उन्होंने सर्वप्रथम गणेश जी का ही मन्दिर बनाया और उसके मुख्य द्वार पर प्रथम पुज्य गणेश जी को ही विराजित किया। सनातनी परम्परा के अनुसार गणेश को **विघ्नहर्ता, विघ्नविनायक, विघ्ननाश, मंगलमूर्ति अविघ्न, विघ्नेश्वर** आदि नामों से सम्बोधित किया गया है। **गणेश पुराण** में इनके आठ अवतारों की विस्तृत व्याखा की गई है। ये नाम है– **वक्रतुण्ड, एकदंत, महोदर, गजानन, लम्बोदर, विकट, विघ्नराट** और **धूम्रवर्ण** (गपु अष्टम खण्ड 1, पृ 413)। इनके मुख्य द्वार पर विराजमान होने से भवन के भीतर बुरी शक्तियों का प्रवेश नहीं होता। ऐसा भी कहा गया है कि घर में रहने वालों पर भी बुरी आत्माओं का प्रभाव नहीं पड़ता। इन्हे **क्षेत्रपाल देवता, नगर रक्षक, क्षेत्ररक्षक** भी कहा गया है। ये उपाधि गणेश जी को मिली इसीलिए वे **विघ्नविनायक** कहलाए। इसी तरह दिग्पाल–दिशाओं के देवता के रूप में

**यम, कुबेर, वरूण**, **शंकर, ब्रह्मा, इन्द्र, अग्नि, वायुऔर अनंत (भवन भास्कर 1, 10–11)** आदि नामों के उल्लेख्य भी मिलते हैं। इसमें भी यदि गणेश जी की प्रतिमा बाईं सूंड के हो तो उसका बहुत महात्म्य है, पूजा की दृष्टि से शुभ मानी गई है। भगवान गणेश के विभिन्न स्वरूपों को पुराणों में व्याख्यायित किया गया है। गणेश पुराण में गणेश की प्रतिमा सुन्दर वर्णन हुआ है। वे दशभुजा युक्त है, कई आभूषण पहने हुए हैं। उनके तीन मुख हैं– मध्य मुख विष्णु, दायां मुख शिव और बायां ब्रह्मा का है। वे सर्प पर पद्मासन की मुद्रा में हैं। (गपु 2,80,5–7)

**मध्य नारायणमुखों दक्षिणे च शिवानना,**
**बायें ब्रह्मामुखः शेषे पद्मासनागतो विभुः**
**तत्फणामण्डलच्छायाः कुन्दकर्प रक्षन्नियः।।**

पुराण में एक स्थान पर उनके सगुण साकार रूप का वर्णन करते हुए लिखा गया है कि मोतियों और रत्नों से उनका मुकुट जड़ित है। सम्पूर्ण शरीर लाल चंदन से चर्चित है। उनके मस्तक पर सिन्दूर शोभित है और गले में मोतियों की माला है। वक्षस्थल पर सर्प–यज्ञोपवीत है। लम्बे से उदर की नाभि चारों ओर से सर्पों से वेष्टित हो।
पुराण में गणेश के **एकदंत** रूप की व्याख्या की गई है।

**एकद्रत चर्तुबाहु गजवक्त्रं महोदरम्।**
**सिद्धि बुद्धि समायुक्तं मूषकारूढ़मेव व।।**
**नाभिशेषं पाशहस्तं परशुं कमलं शुभम्।**
**अभयं दधतं चैन प्रसन्नवदनांम्बुजं।**
**भक्तेभ्यो वरदम् नित्यम भक्तानाम् निषूदनं।। (गपु पृ 132)**

उस गणेश्वर के एक दंत चार बाहुएं हैं। मुख हाथी के समान है और बड़ा है। वे सदैव सिद्धि–बुद्धि सम्पन्न और मूषक की सवारी करने वाले हैं। उनकी नाभि में शेषनाग और हाथों में पाश, परशु, सुन्दर कमल और अभय मुद्रा सुशोभित है। उनका मुख–कमल सदैव प्रसन्नता से खिला हुआ रहता है। वे भक्तों को सदा वर प्रदान करने वाले और अभक्तों का विनाश करने वाले हैं।
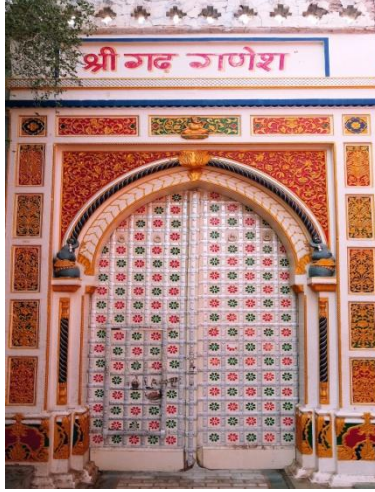
**मयमत** में गणेश की प्रतिमा के लक्षणों पर विचार किया गया है। यह प्रतिमा गजमुख होनी चाहिए तथा एक दन्त हो। स्थूलकाय तथा तीन नेत्रों वाले हों तो अतिउत्तम होते है। रक्तवर्ण, चार भुजाएं, छोटेकद के तथा महोदर होने चाहिए। गणेश जी के **सर्प** या **नाग** की यज्ञोपवीत धारण करवानी चाहिए। वे कमल के आसन पर विराजमान हो (कमलासन)। वाम पैर नीचे निकला हो तथा दूसरा पैर मुड़ा हुआ हो। उनकी सूण्ड वामावर्त हो अर्थात बाईं ओर मुड़ी हो तथा अंगुलीयम (अंगुठी) धारण किए हुए होने चाहिए। बाएं हाथों में अक्षमाला तथा मोदक (लड्डू) हो तथा दाएं हाथों में वे अपना टूटा हुआ दांत तथा अंकुश पकड़े हो। उन्हें करण्ड मुकुट, मौलीवन्ध से भी अलंकृत किया जाना चाहिए। इन सबके साथ–साथ उनके वाहन मूषक का भी अंकन होना चाहिए। (मनुष्य...श्लोक 11 पृ 117) इस प्रकार शास्त्रोक्त गणेश को ही विराजमान करने का निर्देश है।

बीकानेर इन सबमें निराला है। यहां वो सब होता है जो कहीं और नहीं। अभी हाल ही में मुझे सर्वे के दौरान कुछ ऐसे प्रतीक देखने का मौका मिला जो मेरे लिए ही नहीं बल्कि सभी के लिए आश्चर्यजनक है। ऐसे प्रतीकों का किसी शास्त्र या पौराणिक ग्रंथ में भी उल्लेख नहीं मिलता। अपनी बात कहने से पहले मैं एक उदाहरण देना चाहता हूं। अभी कुछ वर्ष पूर्व मैंने शेखावाटी के जल स्रोतों की तकनीक पर कार्य किया वेसे अब भी कर रहा हूं, जिसमें मैने वहां के जल स्रोतों तथा बीकानेर के तालाबों, कुओं तथा बावड़ियों का सर्वे किया। मैने पाया कि इन स्रोतों के आस–पास लगे स्तभों पर कई प्रतीक बने हैं तथा इनके निर्माण की तिथि का भी अंकन है। चौकोर स्तंभ के चारों ओर चार प्रतीकों में **गणेश, सूर्य, गाय** तथा **चन्द्रमा** की आकृति बनी हैं। यहां सूर्य प्रतीक के रुप में है, जबकि बीकानेर में सूर्य सात घोड़ों पर आरूढ़ दर्शाए गए हैं। हमें पोकरण तक सूर्य का अंकन ऐसा ही मिलता है। बीकानेर के कुओं के स्तभों को देखें तो उनमें चंद्रमा के स्थान पर स्थानीय लोक देवी **मां करणी** का अंकन मिलता है। इसी तरह पास के ही गांव **श्रीरामसर व सुजानदेसर** में लोकदेवता **रामदेवजी** को अश्व पर आरूढ़ दर्शाया गया है। यह इस बात का द्योतक है कि जिस देवता के प्रति हमारी निष्ठा,

आस्था व श्रद्धा होती है हम उसी का अंकन करते हैं। इसी तरह यहाँ की हवेलियों में कुछ विचित्र से अंकन मिलते हैं।

## श्री गोपाल हरमोन दास बागड़ी हवेली बागड़ी मौहल्ला, बीकानेर (विसं1985)–

बीकानेर के बागड़ी मौहल्ले में स्थित यह हवेली सामान्य है, एक मंजिला है। बहुत ज्यादा क्षेत्रफल भी नहीं है और एक छोटी सी गली में स्थित है। अधिकतम ऊंचाई दस से बारह फीट ही है। ऊपर लोहे की जाली लगी है और छत खुली है। विसं 1985 में बनी यह हवेली मौहल्ले में बनी अन्य हवेलियों से अलग है। हम यहां सिर्फ इसमें मुख भाग की ही चर्चा करेंगे। इस हवेली के मुखड़े पर जो नक्काशी की गई है वैसा उदाहरण हमें अभी किसी अन्य स्थान पर नहीं मिला है।

15 फीट चौड़ी तथा 12 फीट ऊंची इस हवेली के मुख्य भाग में दो दरवाजों वाली प्रोल है। अर्द्धचन्द्रकार दोनों कपाट साधारण ही हैं। सामान्यतः प्रोल के बाईं ओर एक छोटा सा दरवाजा होता है जो आवागमन के लिए काम में लिया जाता है। सुरक्षा, प्राकृतिक प्रकोप तथा कलात्मकता के साथ–साथ यह रसुख का भी प्रतीक होती है। लेकिन यहां दांयी ओर भी वैसा ही दरवाजा बना है जैसा बाईं ओर है, ऐसा हमें बहुत कम ही मिलता है। प्रोल की कोर पर हल्की नक्काशी की गई है,जिसमें किया गया अंकन पीपल के पत्तों की तरह दिखाई देता है।

इसे **पान** की बेल के रूप में भी देखा जा सकता है। हवेली के पूरे मुख मण्डल पर कुछ इस तरह के पत्ते ही बने हैं, लेकिन वे पानपत्र जैसे नही हैं। जहां प्रोल के दोनों दरवाजे मिलते हैं उसके ठीक ऊपर पत्थर की कोर पर फूल गुच्छ है। उसके ऊपर एक **हिरन** का अंकन है, हिरन का अंकन किसी हवेली के मुखड़े पर प्रथम दृष्टया ही देखा गया है।

हिरन के ऊपर प्रथम पूज्य श्री गणेश जी का अंकन किया गया है। पुष्प गुच्छ पर विराजित गणेश जी पद्मासन की मुद्रा में है। इनकी बांई ओर उठी हुई सूंड आंख तक मुड़ी हुई है, सामान्यतः सूंड लम्बी होती है फिर बांई ओर मुड़ती है। चतुर्भुज गणेश जी जिस पुष्प गुच्छ पर विराजमान है उसके दोनों ओर इनके वाहन **मूषक** बने हैं। दोनों ओर रिद्धि–सिद्धि (भगवान गणेश की पत्नियां) कमण्डल लिए चंवर हिला रही हैं। गले में हार तथा जनेऊ का अंकन स्पष्ट दिखाई दे रहा है। श्री गणेश जी की प्रतिमा के दाईं ओर एक छोटा फ्रेम बना है, जिन्हें दो परियों को पकड़े हुए दिखाया गया है।

फ्रेम में हवेली के मालिक **श्रीगोपाल बागड़ी** तथा बाईं ओर **हरमोन दास** (ये या तो हरमोहन है या हनुमान है) एवं **संवत् 1985 (1928)** लिखा है। ये पूरा पैनल प्रोल के ऊपर के हिस्से में आबद्ध किए हैं। पूरा पैनल बड़ी–बड़ी पत्तियों के अंकन से सजा हुआ है। एक बात मुझे हमेशा अजीब लगती है कि जिस मरू प्रदेश में चारों ओर रेत के टीबे थे, पेड़ दूर–दूर तक नहीं दिखते थे और वनस्पति के नाम पर कीकर या बबूल के ही पेड़ थे वहां प्रतीकों के अकंन में इस तरह से बड़ी–बड़ी पत्तियों को केसे बनाया गया। कैसे बंदनवार बना दी जाती थी, जबकि ये इस इलाके के लिए दुर्लभ थी। कारीगर की सोच और एक परम्परागत अलंकरण शैली का प्रभाव ही ऐसे निर्माण का कारण हो सकता है।
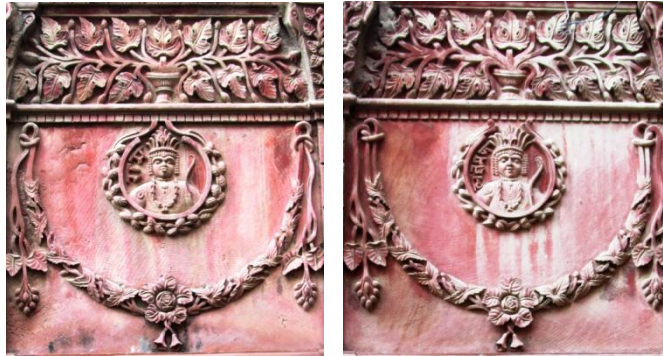
प्रोल के बाईं ओर एक दरवाजा है जो शौचालय या स्टोर है,क्योंकि हवेलियों के भीतरी भाग में शौचालयों के प्रमाण नहीं मिलता। भवन के मुख मण्डल का प्रमुख आकर्षण प्रोल का बायां भाग है। यहां चार मनमोहक अलंकरण हैं– **श्रीराम, लक्ष्मण, सीता (ज्योनकी)** तथा **हनुमान (पवनसुत)**। ये कोई सामान्य अंकन नहीं है। पत्थर पर धनुर्धारी राम का अंकन उभरा हुआ है, जिसके चारों ओर पुष्पों की माला (बंदन माल, बंदर माल) बनी हुई है, जो बड़ी ही सुन्दर है। । इसी तरह का अंकन लक्ष्मण की प्रतिमा में भी हुआ है। इन दोनों के चेहरों में प्रसन्नता के भाव दृटिगोचर हो रहें हैं। ये अंकन तत्कालीन स्थापत्यकला की शैली तथा उस समय के कलाकारों की कुशलता का प्रमाण भी है। इस तरह का अंकन अभी तक किए गए सर्वे में कहीं और सामने नहीं आया है। हवेलियों को चित्रों से सजाने की परम्परा हमें लगभग पूरे राजस्थान में मिलती है, लेकिन इस तरह (राम व लक्ष्मण) का सृजन मेरी दृष्टि में पहली बार ही आया है।

दोनों देव स्वरूपों के ऊपर फूलदान बने हैं, जो पूरे फ्रेम को आकर्षक बना रहा है। इन गुलदस्तों के बीच में दो अद्‌भुत प्रतिमाएं बनी है, जिनमें एक आकृति में **ज्योनकी (सीता)** तथा दूसरी पर **पवनसुत** लिखा है। सीता की प्रतिमा बहुत छोटी है लेकिन उनका स्थान राम और लक्ष्मण से ऊंचा रखा है। इसी प्रकार हनुमान को भी ऊपरी छोर पर बिठाया है। जैसे भी हो पूरे **राम दरबार** को हवेली के मुख मण्डल पर स्थान दिया गया है। ये हम पहले भी कहते आए हैं कि हवेलियों में जिस देव स्वरूप का अंकन हुआ हो तो यह मान लेना चाहिए कि भवन का मालिक का निश्चित ही राम भक्त है। ये अलंकरण इस हवेली को शहर की अन्य हवेलियों से अलग करता है। इन सभी स्वरूपों के सिर पर **सेहरा** या **मुकुट** है, जो इनको किसी **बंगाली** या **मद्रासी** जैसा दिख रहा है। इस तरह के मुकुट राम–लीला में भी किरदारों को पहनाए जाते हैं। इससे यह माना जा सकता है कि कारीगर बंगाल या दक्षिण भारत के थे। वैसे सम्पूर्ण हवेली को देखें तो बहुत ही साधारण सी प्रतीत होती है।

ये हवेली वास्तव में आकर्षण पैदा करती है। चित्रकला में इस प्रकार के अंकन को **प्रभावित सृजन पद्धति** का नाम दिया गया है। इसी प्रकार परम्परागत भारतीय चित्रण परम्परा में संयोजन सिद्धान्त के प्रभाविता नियम के अनुरूप इस तरह का अंकन होता है और यहां भी इसी को काम में लियाा गया है। एक जैसा अंकन एक ही आकृति की पुनरावृत्ति के द्वारा आकृति में प्रभाविता सृजन किया जाता है। इसे देखकर उन कलाकारों व निर्माण कर्ताओं की

दृष्टि पर गर्व होता है कि उन्होंने राम को आज से सौ साल पहले ही वो सम्मान दे दिया और पता भी नहीं चला।